ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इषं स्तोतृभ्य आ भर।। सामवेद 971

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! स्तोताओं के लिए अन्न और धन प्रदान कर। O the Bounteous Lord ! Bestow all kinds of food and wealth for your divotces.

वर्ष 38, अंक 7 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 22 दिसम्बर, 2014 से रविवार 28 दिसम्बर, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 191 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सब मनुष्यों में समानता का आधार – वेद

त्व हि नः पिता वसो।
त्वं माता शतक्रतो बभूविथ।
अधा ते सुम्नमीमहे।

(ओ३म्) शान्तिः शान्तिः!! 2 ओ३म्।।

अर्थात् – हे सबको बसाने वाले। हे सबमें बसने वाले। सैकड़ों प्रज्ञाओं और बलों से युक्त। तू ही हमारे पिता, पालक और उत्पादक है। तू ही माता के समान स्नेही और शिक्षक है। अतः हम तुझसे सुख की याचना करते हैं।

O Lord Indra! You give shelter to all and you execute hundred deeds. You provide maintenance like a father and you hold like a mother. All of us come to you for begging for the pleasure.

O Lord Indra! We expect the best and competence full of splendor while reciting your prayer because you are adorable by the countless devotees. You are mighty, appreciated and full of strengths.

उस विराट हिरण्यगर्भ तेजस् ईश्वर से मैं प्रज्ञा की कामना करती हूँ। मैं जो कुछ भी लिखने जा रही हूँ। हे प्रभु। आपके निर्देशन में मैं कुछ भी अनिष्ट न लिखू, ऐसी मुझे शक्ति प्रदान कीजिए। वेद में मानव जाति को एकता के सूत्र में, प्रेम के बंधन में बाँधने की क्षमता है।

पं. लीलामणि करीमन (बैंकॉक)

स्वयं ईश्वर ने विश्व कल्याणार्थ एवं विश्व में शांन्ति कायम रखने हेतु यह ज्ञान ऋषियों के आलम्बन में मानव तक पहुँचाने का महत् कार्य किया है। वेदानुसार पूरा विश्व एक परिवार है। वेद पूरे विश्व को एक परिवार के रुप में संगठित करने की व्यवस्था है।

– शेष अगले अंक में

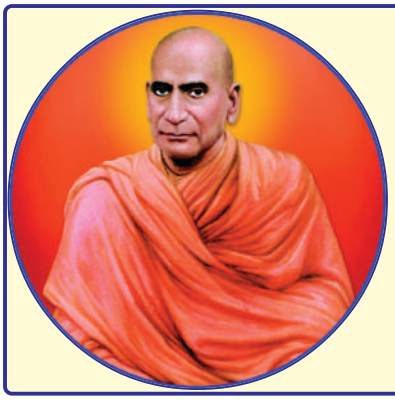

दिल्ली सहित भारत में अनेक स्थानों पर
"न कोई जाति–न कोई भेद, सारे भारतवासी एक"
संकल्प के साथ
88वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न
(विस्तृत समाचार अगले अंक में)

विशेष सम्पादकीय

धर्मान्तरण–मतान्तरण–घर वापसी–शुद्धिकरण : एक विश्लेषण

आज भारत वर्ष में मीडिया एवं समाचार पत्रों में धर्मान्तरण के नाम पर जो शोर शराबा, एवं राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप जारी हैं, परन्तु 'धर्मांतरण' के रहस्य को समझे बिना कहीं स्वार्थ और कहीं निराशा की धारणाओं का बाजार गर्म है। परन्तु मैं भी यह मानता हूँ कि 'धर्मान्तरण' पर एक खुली बहस अवश्य होनी चाहिए। सर्व प्रथम हमारा उत्तरदायित्व बनता है कि हम उस विषय के सभी पक्षों की जाँच एवं पड़ताल करें, उसके उचित-अनुचित पहलुओं एवं उसकी सार्थकता पर विस्तृत विचार-विमर्श करें, जिससे उसकी मौलिकता को जान सकें। सर्वप्रथम हम यह जानने का प्रयास करें कि-'धर्म' क्या है? विषय की विवेचना देने के लिए हमारे साक्ष्य ऐसे हों, जो विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरें। आज का भौतिक विज्ञान भी यह सिद्ध कर चुका है कि-सृष्टि को प्रारम्भ हुए लाखों/करोड़ों वर्ष हो चुके हैं। जिसका स्पष्ट प्रमाण महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदोत्पत्ति विषय में किया है। यद्यपि जब हम मत-मतान्तरों के समयावधि को जानने का प्रयास करते हैं, तो 2500 वर्षों की परिधि में विश्व के सब मत-मतान्तर आ जाते हैं जिसमें 2500 वर्ष जैन-बौधमत, 2000 वर्ष ईसाई मत, लगभग 1400 वर्ष इस्लाम मत के आविर्भाव को हुए हैं। अब प्रश्न उठता है कि 2500 वर्ष से पूर्व ये सब कौन थे? इसका एक ही उत्तर है कि 'आर्य' और यह समुदाय तब तक आर्य रहा जब तक वैदिक मान्यताओं के आधार पर आचरण करते रहे। वेद विरुद्ध आचरण करने से वेदानुयायियों ने इनका बहिष्कार किया, तो स्वेच्छाचारी होकर इन्होंने अपने-अपने मत से सम्प्रदायों को आरम्भ किया। यद्यपि विश्व के इतिहास में सर्व प्राचीन ग्रन्थ वेद तथा संस्कृति वेद की संस्कृति है। धर्म की विवेचना देते हुए महर्षि मनु ने धर्म के दस लक्षण (धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य, अक्रोध) बताये हैं तथा **'वेदो ऽखिलो धर्म मूलम्'** अर्थात् सम्पूर्ण वेद ही सार्वभौमिक धर्म का आधार है और वेद ईश्वर कृत है, जो स्वतः प्रमाण है। अतः वैदिक धर्म सम्पूर्ण मानव जाति का धर्म है इसलिए जो मानव किसी परिस्थिति वश वैदिक धर्म का त्याग करता है, वह धर्मभ्रष्ट, धर्मच्युत अथवा धर्म-पतित कहलाता है न कि धर्मान्तरण। धर्मान्तरण तो वहां होता है जहाँ पर कोई उसके बराबर धर्म हो। लेकिन धर्म तो केवल एक है। जो ईश्वरकृत है। जो वेदोकृत है बाकी सब मत हैं क्योंकि ये मनुष्य कृत है। अतः वैदिकता से अलग कोई दूसरा धर्म नहीं हो सकता तो धर्मान्तरण कैसे हो जाऐगा। इसके लिए एक दृष्टान्त

– शेष पृष्ठ 6 पर

हिन्दू संगठन एवं शुद्धि

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा रचित 'हिन्दू संगठन' अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक हैं जिसे पढ़कर हिन्दू समाज को संगठन की क्यों आवश्यकता हैं यह ज्ञात होता हैं। 1920 के दशक में मजहबी उन्माद के चलते देश में अनेक स्थानों पर दंगे हुए जिनमें हिन्दू समाज का बहुत नुक्सान हुआ। महात्मा गांधी ऐसे विकट समय में मुसलमानों की स्वराज के नाम पर लुभाने में लगे रहे। वैदिक धर्मी (हिन्दुओं) की रक्षा का कोई उपाय न होता देख स्वामी श्रद्धानंद जी ने हिन्दू संगठन एवं शुद्धि का नारा दिया। प्रस्तुत अलभ्य पुस्तक को आप निम्न लिंक से पढ़ें और सोचे कि आज भी वैदिक धर्मियों (हिन्दुओं) को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संगठित होने की परम आवश्यकता हैं। प्रस्तुत अलभ्य पुस्तक को आप निम्न लिंक से पढ़े- https://drive-google-com/file/d/0B7e0J8&bSANDTk13OEhvXzVUQnM/view

– डॉ. विवेक आर्य

वेद-स्वाध्याय

देवयान प्रभु प्राप्ति का मार्ग

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

एतं जानाथ परमे व्योमन्देवाः सधस्था विद रूपमस्य।
यदागच्छात् पथिभिर्देवयानैरिष्टापूर्त्ते कृणवाथाविरस्मै।।
यजुर्वेद : अध्याय १८ मन्त्र ६०

अर्थ—हे **(सधस्थाः देवाः)** उपासना स्थल में एक साथ बैठने वाले विद्वज्जनो! आप लोग **(परमे व्योमन्)** महदन्तरिक्ष और हृदयाकाश में व्याप्त **(एतं जानाथ)** इस परमात्मा को जानो और इसके व्यापक **(रूपम्)** सत्य, आनन्द सच्चिदानन्दस्वरूप को **(विद)** जानो **(यत्)** जिस सच्चिदानन्दस्वरूप परमेश्वर को **(देवयानैः)** धार्मिक विद्वानों द्वारा गृहीत देवयान के मार्ग से पुरुष **(आगच्छात्)** भली प्रकार प्राप्त होवे। इस परमेश्वर के लिये **(इष्टापूर्त्ते)** श्रौत और स्मार्त्त कर्म [यज्ञादि] को **(कृणवाथ)** प्रकाशित किया करो।

द्वे स्रुती अश्रृणवं पितृणामहं देवानामुत मर्त्यानाम्। ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च॥ ऋ० १०.८८.१५

मैं देवों और मनुष्यों के जाने के दो मार्ग सुनता हूँ। यह सारा संसार उन दोनों मार्गों से गति करता हुआ गमनागमन करता हुआ चल रहा है जिनका जन्म माता-पिता के सम्बन्ध से है वह सतत आवागमन में फँसा हुआ घूम रहा है।

पितृयान

तद् ये ह वै तदिष्टापूर्त्ते कृत्य मित्युपासते ते चान्द्रमसं लोकमभि यजन्ते। त एव पुनरावर्तन्ते तस्मादेते ऋषयः प्रजाकामा दक्षिणं प्रतिपद्यन्ते। एष ह वै रयिर्यः पितृयाणः॥
प्रश्नो० १.९

जो लोग इष्ट—दर्शपौर्णमासेष्टि श्रौत कर्म को करते हैं, पूर्त्त-स्मार्त कर्म अर्थात् कुआ, तालाब, बावड़ी, अनाथालय, धर्मशाला आदि जनता के लिये बनवाना आदि परोपकार-कर्म करते हैं वे मृत्यु के पश्चात् चन्द्रलोक को प्राप्त होते हैं। चन्द्रलोक से अभिप्राय अच्छे लोक जहाँ लौकिक शान्ति-सुखों की प्रचुरता हो। अपने पुण्यकर्मों को भोग लेने के पश्चात् इस लोक या इससे हीन लोक में जन्म लेते हैं। पुत्र-पौत्रादि एवं धनैश्वर्य को देने वाला यह दक्षिणायन या पितृयान का मार्ग है जिसमें आवागमन बना रहता है जिसे अल्पबुद्धि लोग अपनाते हैं और पुत्रैषणा, वित्तैषणा तथा लोकैषणा की कामना रहती है। यह मार्ग सत्वयुक्त, रजोगुण वाले लोगों का है जिसमें रयि अर्थात् ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

देवयान

अथोत्तरेण तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया विद्यया आत्मानमन्विष्या दित्यमभियजन्ते। एतद् वै प्राणानामाय तनमेतदमृतमभयमेतत् परायणम्॥
प्रश्नोपनिषद् १.१०

जो प्रवृत्ति मार्ग को छोड़कर निवृत्ति मार्ग [देवयान] का आश्रय लेते हैं वे तप, ब्रह्मचर्य, श्रद्धा और विद्या द्वारा आत्मा-परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर सूर्यलोक को जीत लेते हैं जो कि जीवन-शक्तियों का भण्डार है और जिसे प्राप्त होकर मृत्यु का भय नहीं रहता अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है।

मन्त्र में एक विशेष बात यह कही गई है कि ईश्वर का साक्षात्कार करने के पश्चात् ही किये गये यज्ञ एवं अन्य धर्मार्थ कार्य फलीभूत होंगे इसके अभाव में वे केवल लोकैषणा को ध्यान में रखकर किये जायेंगे जिनका लाभ कम हो जायेगा। ऋग्वेद ५.३.५ में कहा है—

विशश्च यस्या अतिथिर्भवासि स यज्ञेन वनवद्देव मर्तान्॥
ऋ० ५.३.५

हे देव! जिस प्रजा के तुम अतिथि बन जाते हो, अपना स्वरूप प्रकट करते हो, वही यज्ञादि उत्तम कर्मों के द्वारा दूसरे मनुष्यों को भी उपकृत करता हुआ उन्हें भक्ति पथ का पथिक बना देता है। सामान्य लोगों द्वारा किये जाने वाले जनहित के कार्य अधिकांश में अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिये किये जाते हैं। इसके विपरीत ईश्वर को अपना आराध्य देव मान जो व्यक्ति परोपकार के कार्य में संलग्न होगा वह ईश्वर की प्रीति के लिये और सबमें ईश्वर विराजमान है इसलिये नर सेवा, नारायण सेवा की भावना से करेगा।

इसका दूसरा अभिप्राय यह भी है कि ईश्वर का साक्षात्कार हो जाने के पश्चात् भी ऐसे साधक को अहर्निश परोपकार, यज्ञादि कर्म करते रहना चाहिये जैसा कि गीता में श्रीकृष्ण जी कहते हैं—

न मे पार्थास्ति कर्त्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन। नानवाप्तव्यमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि॥ गीता ३.२२॥

हे अर्जुन! मुझे इन तीनों लोकों में कुछ भी कर्त्तव्य शेष नहीं रह गया है और न ही कोई प्राप्त करने योग्य वस्तु अप्राप्त है, तब भी मैं सतत जनहित के कर्मों में लगा रहता हूँ। जब ऐसा साधक परोपकारक कर्म करेगा तो उसे आदर्श मान दूसरे लोग भी उसका अनुकरण करते हुए आध्यात्मिक मार्ग की ओर आकृष्ट होंगे। इसमें सन्देह नहीं। परमात्मा स्वयं यज्ञ रूप है जिसने प्राणिमात्र के लिये सृष्टि की रचना की है। जो उसकी प्रजा के हितार्थ यज्ञादि उत्तम कर्म, परोपकार सेवा आदि में पुरुषार्थ करता है, उससे वे प्रसन्न होंगे ही।

एतं जानाथ परमे व्योमन् देवाः सधस्था विद रूपमस्य।

हे विद्वानो! आप लोग मिलकर इस परम ब्रह्म के स्वरूप का निश्चय करो। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप है। प्रकृति सत्, जीवात्मा सत् चित् और परमेश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप है। तैत्तिरीयोपनिषद् ब्रह्मानन्दवल्ली में आनन्द की मीमांसा करते हुये कहा है—एक सदाचारी युवक पढ़ा-लिखा, दृढ़ और सुदृढ़ शरीर वाला है। उसके लिये यह सारी पृथिवी धन-धान्य से पूर्ण हो जाये। उसे जो आनन्द प्राप्त होगा वह एक मानुष आनन्द है। ऐसे एक सौ आनन्दों के समान गन्धर्वों का आनन्द, एक सौ गन्धर्वों के आनन्द के समान एक पितरों का आनन्द होता है। ऐसे ही देव, इन्द्र, बृहस्पति, प्रजापति का आनन्द है। यह आनन्द वेदों के विद्वान् और तीनों एषणाओं से शून्य उपासक को प्राप्त होता है।

परमात्मा आनन्दस्वरूप इसलिये है कि वह निराकार, सर्वशक्तिमान् सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और अद्वितीय है। शरीर के साथ सुख-दुःख लगे ही रहते हैं। अल्पशक्तिवाला भी सर्वात्मना सुखी नहीं रह सकता। इसी भाँति अल्पज्ञता भी भूलों का हेतु बन दुःखदायी होती है। एकदेशी में यह सामर्थ्य नहीं है कि वह समस्त ब्रह्माण्ड का ज्ञान प्राप्त कर सके। ज्ञान के अभाव में अज्ञान दुःख का हेतु बनता है। भय दूसरे से होता है। जब ईश्वर एक ही है उसके समान दूसरा और कोई नहीं है तो उसका अभय और आनन्द गुण युक्त होना स्वाभाविक है। विद्वान् लोग परस्पर चर्चा कर ब्रह्म के स्वरूप को जान दूसरे लोगों को भी इसका ज्ञान करायें।

यद्यपि सर्वव्यापक होने से वह सर्वत्र विद्यमान है परन्तु उसका ज्ञान वहीं हो सकता है जहाँ आत्मा और परमात्मा दोनों विद्यमान हों। ऐसा स्थान हृदयान्तरिक्ष ही है जिसे मन्त्र में परमे व्योमन् कहा है। **अथ यदिदमस्मिन् ब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म दहरोऽस्मिन्ताराकाशस्तस्मिन्यदस्त दन्वेष्टव्यं तद् वाव विजिज्ञासितव्यमिति।** (छा० ८.१) इस शरीर में कमल के बन्द पुष्प जैसा हृदयाकाश है जिसमें ब्रह्म व्याप्त हो रहा है। उसी का अन्वेषण और जानने की इच्छा करनी चाहिये। देवयान का पथिक तप, ब्रह्मचर्य, श्रद्धाभाव और विद्या के अभ्यास से क्रमशः पञ्चकोषों का अन्वेषण करता हुआ आनन्दमय कोष में उस आनन्दस्वरूप ब्रह्म का दर्शन करता है।

- *क्रमशः*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - हैल्प लाइन
समस्या समाधान/जानकारी हेतु किससे सम्पर्क करें?

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा-15 हनुमान रोड, नई दिल्ली ने दिल्ली की आर्यसमाजों/आर्य शिक्षण संस्थाओं/आर्यजनों तथा आर्यसन्देश के माननीय सदस्यों के लिए हैल्पलाइन सुविधा आरम्भ की है। आप अपनी समस्या/सम्बन्धित जानकारी के लिए दोपहर 12:30 से सायं 7:30 बजे तक किसी भी कार्य दिवस में निम्न महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं। यदि आपकी समस्या सुनी नहीं जाती है तो कृपया अपनी समस्या तथा किससे सम्पर्क किया गया, उसका विवरण aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें-

वैदिक प्रकाशन/विक्रय विभाग -	श्री विजय आर्य (9540040339)
आर्यसन्देश न मिलने पर -	श्री एस. पी. सिंह (9540040324)
भजनोपदेशक/उपदेशक सेवा -	श्री ऋषिदेव आर्य (9540040388)
मुकदमा/कानूनी सहायता -	श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (9212082892)
वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजन हेतु-	श्री अर्जुन देव चड्ढा (9414187428)
वैवाहिक परिचय आवेदन/जानकारी हेतु -	श्री एस. पी. सिंह (9540040324)
दशांश-वेद प्रचार/प्रशासनिक कार्य -	श्री अशोक कुमार (9540040322)

- *महामन्त्री*

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्यसमाज और धर्मान्तरण

आज विभिन्न सम्प्रदायों में ईश्वर प्राप्ति हेतु जो विभिन्न पूजा पद्धतियां हैं उन्हीं को ही हम धर्म समझ लेते हैं या ऐसा कहें कि धर्म ही सम्प्रदाय के लिए प्रयोग में आने के कारण सम्प्रदायों के लिए भी रूढ़ हो गया है। इस समय अनेक मत-मतान्तर वर्तमान हैं जिनमें पारस्परिक मतभेद अज्ञान व्यक्तिगत लाभ भ्रम मन्दबुद्धिता आदि होने से प्रत्येक समुदाय कुछ विशेष बातों को सिद्धान्त के रूप में लेकर मत-मतान्तर रूपी मृग मरीचिका फैलाने में अग्रसर है। संसार के मुख्य सम्प्रदाय ईसाई बौद्ध हिन्दू कनफ्यूसियनिज्म मुसलिम जैन यहूदी सिक्ख ताओइज्म और जोरास्ट्रियन हैं। महर्षि दयानन्द द्वारा धर्म की परिभाषा करते हुए कहा गया है कि ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए पक्षपात रहित न्याय और सबका हित करना धर्म है। यह धर्म प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सिद्ध किए जाने योग्य और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के मानने योग्य हैं। अथर्ववेद के बारहवें काण्ड में धर्म की विस्तृत व्याख्या करते हुए इसका अर्थ सत्य न्याय सहिष्णुता परोपकार संयम तप और दया आदि किया गया है। साथ ही इन्हें धर्म के सार्वभौम सिद्धान्त भी बताया गया है। वैशेषिक दर्शन के रचयिता महर्षि कणाद ने धर्म का लक्षण करते हुए कहा है कि धर्म उस आचरण का नाम है जिस से मनुष्य की इस लोक में भी सर्वांगपूर्ण उन्नति होती चले और वह मोक्ष का अधिकारी भी होता जाये।' यदि हम उक्त कसौटी पर इन तथाकथित धर्मों की जांच करें तो पाते हैं कि कोई भी धर्म न तो इस लोक में किसी प्रकार की उन्नति कराने में सहायक है और न ही परलोक में मोक्ष दिला सकता है। हम केवल कुछ विश्वासों को ही धर्म नहीं मानते हैं अपितु हमारे लिए यह जीवन बिताने का एक ढंग है जिस पर चल कर न केवल इस संसार में हम उन्नति कर सकते हैं आगे परलोक में भी अपने को ब्रह्म प्राप्ति के योग्य बना सकते हैं। वेदों में नैतिकता और चारित्रिक शुद्धता पर बल दिया जाता है। वेदों और वेदानुकूल उपनिषदों और दर्शन आदि ग्रन्थों में सत्य ज्ञान दया तप श्रद्धा दीक्षा दान आदि गुणों पर बल दिया जाता है। वेदों को केवल पढ़ना और कण्ठस्थ करना ही आवश्यक नहीं अपितु वेदों को अपने जीवन में ढालना और उनके अनुसार जीना भी आवश्यक है। ऋग्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है कि जो वेद प्रतिपादित विधि से न इस लोक को सिद्ध करते हैं और न परलोक को न कर्मशील बनते हैं और न ब्रह्मज्ञानी - वे अज्ञानी इस वेदवाणी को प्राप्त कर के भी पाप-व्यवहार में ही फंसे रहते हैं उनकी उन्नति नहीं हो पाती है। लोग वेद के केवल शाब्दिक ज्ञान प्राप्त करके अपने को कृतकृत्य मान लेते हैं यह भी उचित नहीं है। ऐसे लोगो के लिए ऋग्वेद में कहा गया है-

उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम्। उतो त्वस्मै तन्वं विसस्त्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः।।

अर्थात् ऐसे लोग वेद पढ-सुन कर भी वेदज्ञ नहीं हैं क्योंकि वेदज्ञान का वास्तविक लाभ आचार-शुद्धि ओर तज्जन्य फल-प्राप्ति नहीं ले सकते हैं। जिनका आचार वेदानुकूल है उन्हीं को वास्तव में वेद का साक्षात्कार हुआ है। यह भी उल्लेखनीय है कि वैदिक धर्म में किसी भी व्यक्ति के केवल विचार और ज्ञान को ही नहीं देखा जाता है अपितु उसके आचरण की शुद्धता देखी जाती है। वैदिक धर्म में सभी के साथ उदारता के साथ मित्रवत् व्यवहार करने की आज्ञा है। इसमें किसी समुदाय विशेष के व्यक्ति का ही नहीं या मनुष्य मात्र का ही नहीं समस्त प्राणियों का उपकार करने का आदेश दिया गया है। वेद में कहा गया है- **त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ अधा ते सुम्नमीमहे** अर्थात् परमात्मा सब का पिता और माता है। जब हम परमात्मा को पिता मानते हैं तो हम स्वतः ही उसके बच्चे होने के कारण आपस में भाई-बहिन हो जाते हैं। इस प्रकार वैदिक धर्म संसार में भ्रातृ भाव फैलाने वाला है न कि विद्वेष की भावना। महर्षि दयानन्द ने यह विचार किया था कि सभी धर्मों में क्या सत्य है और क्या सत्य नहीं है यह जानना आवश्यक है और इसीलिए सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें से चौदहवें समुल्लासों में इन बिन्दुओं पर विस्तृत चर्चा की थी और सभी धर्मों की समालोचना की एक प्रथा चलाई थी। इन समालोचनाओं से अन्य धर्मावलम्बियों को कोई हानि नहीं हुई है अपितु लाभ ही हुआ है क्योंकि इन धर्मों की समालोचना के बाद इनके मन्तव्यों की व्याख्याओं में सुधार होकर बड़ा परिवर्तन हुआ है और वे पहले की तुलना में अधिक तर्कसंगत हो गए हैं। आर्यसमाज या वैदिक धर्म का उद्देश्य **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** अर्थात् सारे संसार के लागों को श्रेष्ठ बनाना है। इसके लिए सभी सम्प्रदाय के लोगों की जीवन शैली में सुधार लाने के लिए उनका अभ्युदय और निःश्रेयस् अत्यन्त आवश्यक है।

आर्यसमाज द्वारा संसार के समस्त मनुष्यों को आर्य बनाने के उद्देश्य हेतु कभी भी धर्मान्तरण करने का प्रयास नहीं किया अपितु धर्म प्रचार कर के मनुष्यों के जीवन में नैतिक बौद्धिक आचार विचार आदि में सुधार करने पर बल दिया गया है। आर्यसमाज की सार्वदेशिक सभा के तत्कालीन महामंत्री, श्री ओमप्रकाश त्यागी जो संसद सदस्य भी थे ने 27 नवम्बर 1978 को लोकसभा में धर्म-स्वातन्त्र्य विधेयक शीर्षक से एक निजी विधेयक भी लोकसभा में प्रस्तुत किया था जिसे सम्पूर्ण आर्यसमाज का समर्थन प्राप्त था और इसके समर्थन में 6 मई 1979 को आर्यसमाज दीवान हाल द्वारा चाँदनी चौक दिल्ली में एक सार्वजनिक सभा आहूत की गई थी जिसमें सभा प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले द्वारा विधेयक का जोरदार समर्थन किया गया था और समस्त आर्य और हिन्दू जनता द्वारा इस विधेयक का समर्थन कर राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को तारपत्र द्वारा अपनी आवाज पहुंचाकर त्यागी जी के हाथ मजबूत करने के लिए जोरदार अपील की गई थी। अरुणाचल के धर्म-स्वातन्त्र्य विधेयक और भारतीय जनता पार्टी के सदस्य श्री बसन्त कुमार पण्डित द्वारा दिसम्बर 1981 में धर्म-परिवर्तन को अनिवार्य रूप से पंजीकृत कराने के लिए रखे गए एक निजी विधेयक को भी आर्यसमाज का पूर्ण समर्थन प्राप्त था। इस प्रकार आर्यसमाज का सदैव से ही यह विचार रहा है कि धर्म को मानने की प्रत्येक मनुष्य को पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिए और इसमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जाना चाहिए। साथ ही आर्यसमाज की यह मनोवृत्ति रही है कि वह **"सर्वे भवन्तु सुखिना सर्वे सन्तु निरामया"** अर्थात् सभी के सुख और कल्याण की भावना से ओत-प्रोत रहता है। वेदों में मनुष्य मात्र के कल्याण की भावना सर्वत्र दिखाई देती है। अथर्ववेद में कहा गया है- **सहृदयं सामनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः'** अर्थात् तुम्हारा हृदय एक हो मन एक हो तुम आपस में लड़ो मत एक-दूसरे को प्यार से चाहो। आर्यसमाज वेद में दिये गये निर्देशों का पालन करता है और यजुर्वेद के एक मन्त्र में कहा गया है -

दृते दृंꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याऽहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे।।

अर्थात् हे परमेश्वर! मुझे समर्थ बनाइये सब प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखें और मैं सब सब प्राणियों को मित्र की दुष्टि से देखूं हम सब परस्पर मित्र की दृष्टि से देखें। महर्षि दयानन्द का कहना है कि सत्यासत्य विषय प्रकाशित किये जाने पर भी जिस की इच्छा हो वह न माने वा माने किसी पर बलात्कार नहीं किया जाता।' इस प्रकार यह स्पष्ट है कि आर्यसमाज किसी को भी अपने विचारों को मानने के लिए कभी बाध्य नहीं करता है अपितु आर्यसमाज के सिद्धान्त और कुछ नहीं वेदों में दिए गए विधि और निर्देश हैं जिनके अनुसार मनुष्य को चलने के लिए वेदों में शिक्षा दी गई है। आर्यसमाज का यह इतिहास रहा है कि इसके द्वारा कभी किसी को धर्मान्तरण के लिए कभी उकसाने का कार्य या धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य नहीं किया और न कभी किसी प्रकार का बल प्रयोग किया। यह अवश्य है कि आत्मोन्नति की अभिलाषा से यदि कोई इसके द्वार पर आता है तो उसे निराश नहीं किया जा सकता है।

- कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री
166, ओल्ड नेहरु कालोनी,
देहरादून - 248001

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां!

तो जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उसकी ईमेल आईडी लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा।

- सम्पादक

शुद्धि का सुदर्शन चक्र चलाया था

तजकर सभी कुपंथ, सन्त बन शरण वेद की आया था।
जन-जन के प्रति श्रद्धा के वात्सल्य भाव दिखलाया था।।

ऊँच-नीच और भेदभाव का जग से भूत भगाया था।
मानव-मानव एक बता, समता का पाठ पढाया था।।

हरिद्वार में गंगा तट पर गुरुकुल खोल दिखाया था।
आनन्द कन्द ऋषि दयानन्द स्वामी का फर्ज निभाया था।।

फिरंगी-संगीनों के आगे सीना खोल दिखलाया था।
सकल विश्व विजयी भारत का ऊँचा भाल कराया था।।

यम नियमों का पालन कर, जीवन सफल बनाया था।
सीने पर गोली खाकर, प्यासे को खून पिलाया था।।

- स्व. स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
भूतपूर्व अधिष्ठाता, वेद प्रचार, दिल्ली आ.प्र. सभा

पूर्वोत्तर भारत गुवाहाटी में पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य प्रचार सम्पन्न

मानव को महामानव बनाने के लिए जहाँ माता-पिता गुरु आचार्य आदि महान माध्यम है, वहीं पर एक छोटी सी पुस्तक भी मनुष्य के जीवन को परिवर्तित कर देती है। इसी कार्य को मूर्त्तरुप देने के लिए भारत के विभिन्न राज्यों में दूर-दराज के क्षेत्रों में विशेषरूप से क्षेत्रीय भाषाओं में वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि ने कमर कसी है। और इसके परिणाम सन्तोष प्रदान एवं उत्साह वर्धन करने वाले हैं। दिल्ली, हरियाणा के साथ-साथ राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, केरल तमिलनाडू, बिहार आदि राज्यों के आदिवासी क्षेत्रों के बाद आसाम के गोहाटी नगर के इन्जिनियरिंग इन्स्टीट्यूट के प्ले ग्राउण्ड में 16 वें (उत्तर-पूर्व) पुस्तक मेले 30 अक्तूबर से 12 नवम्बर तक 'वैदिक-साहित्य' पुस्तकालय का शुभारम्भ किया। इस कार्य में विशेष योगदान उपप्रतिनिधि सभा गोहाटी (आसाम) के प्रधान श्री आर.के. सिंघल जी का रहा जिनके सान्निध्य में पुस्तकालय का सुन्दर क्रियान्वयन किया गया। मेले में पुस्तकालय की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि पुस्तकालय में छः भाषाओं (नेपाली, बंगाली, आसामी, अंग्रेजी, हिन्दी एवं संस्कृत) का साहित्य प्रचूर मात्रा में उपलब्ध था जिसकी व्यवस्था प्रसिद्ध कर्मठ आर्य कार्यकर्ता डॉ० विवेक आर्य जी ने की। जिसमें दिल्ली सभा का उद्देश्य कि-"क्षेत्रीय भाषाओं में वैदिक साहित्य प्रचार से वैदिक ज्ञान जनसाधारण तक पहुँचे" उन्नति की ओर अग्रसर है। धर्म एवं पुस्तक प्रेमी व्यक्तियों द्वारा आर्य समाज के साहित्य का क्रय किया गया जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश का विक्रय उल्लेखनीय रहा। यह धर्म प्रचार का एक सराहनीय प्रयास है।

पूर्वोत्तर में आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य प्रचार स्टाल पर वैदिक साहित्य को देखते युवक एवं युवतिया तथा स्टाल पर कार्यरत कार्यकर्ता श्री रवि प्रकाश।

कटक, इन्दौर, बरेली एवं चण्डीगढ़ में आयोजित पुस्तक मेलों में भागीदारी

गोरखपुर, कोलकाता एवं नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेलों भी होगा वैदिक साहित्य प्रचार

नेशनल बुक ट्रस्ट नई दिल्ली की ओर से उडिसा के कटक में 18 दिसम्बर को 'कटक पुस्तक मेले' का शुभारम्भ हुआ। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने पूर्व निर्णय के अनुसार इस पुस्तक मेले में भी वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए स्टाल बुक कराया। वैदिक साहित्य की स्टॉल से वैदिक साहित्य का विक्रय बड़ा प्रशंसनीय रहा जिसमें वैदिक साहित्य का उडिया भाषा में सर्वाधिक विक्रय हो रहा है। उडीसा राज्य के 'रामदेव' माने जाने वाले स्वामी सुधानन्द जी महाराज का योगदान उडिया साहित्य उपलब्ध कराने में भरपूर सहयोग रहा। स्वामी जी कटक क्षेत्र में 100 लोगों से चलभाष सम्पर्क कर एक टीम बनाकर समाज में वैदिक साहित्य के माध्यम से वेद ज्ञान से अवगत कराने का संकल्प किया है। यह पुस्तक मेला 26 दिसम्बर 2014 तक कटक के बलियात्रा ग्राउन्ड किल्ला पडिया में चला।

इसी के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार कार्यक्रम के अन्तर्गत मध्य प्रदेश के इन्दौर में 6 से 14 दिसम्बर तक आयोजित किया गया।

सभा अपने सम्पूर्ण साधनों का प्रयोग करके वैदिक साहित्य की पहुंच जन साधारण तक पहुंचाने के लिए कृत संकल्प है। इसके लिए सभा ने न केवल सरकार द्वारा आयोजित अपितु निजी संस्थाओं द्वारा आयोजित पुस्तक मेलों में भी स्टॉल बुक कराकर वैदिक साहित्य के प्रचार का कार्य आरम्भ किया है। इस कड़ी में अमर उजाला ग्रुप द्वारा आयोजित उत्तर प्रदेश के बरेली में दिनांक 22 से 30 नवम्बर, चण्डीगढ़ पुस्तक मेले में दिनांक 19 दिसम्बर से 28 दिसम्बर, 2014 में भी भाग लिया।

सभा आगामी पुस्तक मेलों गोरखपुर पुस्तक मेला - 16 से 25 जनवरी, 2015, कोलकाता पुस्तक मेला - 28 जनवरी से 14 फरवरी तथा नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 15 से 22 फरवरी, 2015 में भी वृहद् स्तर पर साहित्य का प्रचार प्रसार करेगी। सभा ने नई दिल्ली पुस्तक मेले में अपने सहयोगी संस्थानों के सहयोग से 7 स्टॉल हिन्दी साहित्य तथा एक स्टॉल अंग्रेजी साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु आरक्षित कराया है। अधिकाधिक संख्या में आर्यजन पहुँच कर वैदिक साहित्य क्रय कर सद्ज्ञान प्राप्त करें।

(ऊपर) इन्दौर पुस्तक मेले में सभा के स्टॉल का दीप जलाकर उद्घाटन करते सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य।

(बांए) कटक पुस्तक मेंले में सभा के स्टॉल पर साहित्य खरीदते महानुभाव।

(दाएं) चण्डीगढ़ में आयोजित पुस्तक मेले में सभा के स्टॉल पर डॉ. विवेक आर्य एवं अन्य कार्यकर्ता।

यात्रा संस्मरण

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर-बैंकॉक

28 अक्टूबर से 12 नवम्बर 2014 तक सिंगापुर, बैंकाक, मलेशिया देशों की यात्रा की। यद्यपि 2 वर्ष पूर्व मैंने इन देशों की यात्रा की थी। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के आयोजन के कारण पुन: यात्रा का कार्यक्रम बना लिया। इन सम्मेलनों में 300 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसमें U.S., U.K, CANADA, AUSTRALIA, MAURITIUS आदि देशों के आर्य सज्जन भी सम्मिलित हुए। सिंगापुर आर्य समाज की स्थापना को 100 वर्ष हो गये तथा बैंकाक आर्य समाज को 94 वर्ष। हजारों किलो मीटर दूर देशों में, जब वैदिक आर्य परम्परा वाले व्यक्तियों, परिवारों, समाजों को प्रत्यक्ष देखते हैं तो हृदय में आनन्दातिरेक की अनुभूति होती है। कुछ छोटी-छोटी अव्यवस्थाओं को छोड़कर सम्मेलन सफल रहा।

पाश्चात्य और पौर्व्य विकसित देशों की बाह्य चकाचौंध करने वाली भौतिक प्रगति को देखकर अधिकांश व्यक्ति प्रभावित होते हैं और वैसा ही बनने का विचार करते हैं, प्रयास भी करते हैं किन्तु सूक्ष्म दार्शनिक दृष्टि न होने के कारण वे आन्तरिक स्थिति का अवलोकन नहीं कर पाते हैं और भ्रान्त धारणा बन जाती है कि ये सुखी हैं, शान्त हैं, सन्तुष्ट हैं। किन्तु वास्तव में ऐसा होता नहीं हैं। बिना आत्मा-परमात्मा को जाने, सच्चे वैदिक ज्ञान के अनुरूप अपने जीवन को चलाये बिना मनुष्य कितनी ही धन सम्पत्ति प्राप्त क्यों न करले, पूर्ण सुखी नहीं हो सकता। दु:खों से घिरा रहता है।

वैदिक ऋषियों ने ईश्वर का ध्यान, आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, सत् पुरूषों का संग, पुनर्जन्म, कर्मफल, समाधि, वैराग्य, व्रत तप, संयम आदि आध्यात्मिक विषयों तथा सिद्धान्तों को "सांपराय" शब्द से इंगित किया है, जो मनुष्य इन विषयों का ज्ञान और तत्सम्बन्धी आचरण नहीं करते हैं वे "मूढ़" संज्ञक मनुष्य होते हैं, ऐसे मनुष्यों की मान्यता यह होती है कि "There is the first and last life, there was no life before this life and these will be no life after this life." यही जीवन है, न इससे पूर्व जन्म था, न मरने के पश्चात् होगा। अपने इस चार्वाक्/विरोचन/नास्तिक वादी सिद्धान्त के कारण अपनी बुद्धि, शक्ति, साधन, समय, चातुर्य, श्रम का पूर्णरूप से इसी जीवन को, अधिकाधिक सामर्थ्यवान्, बनाकर अधिकाधिक भोगों को प्रयास करते हैं और इस एकांगी क्षेत्र में वे सफल हो जाते हैं। किन्तु इस जीवन के बाद सर्वथा विनाश है, अन्धेरा ही अन्धेरा है, दु:ख ही दु:ख है।

जब किसी व्यक्ति-समाज-राष्ट्र कर जीवन का लक्ष्य ही भिन्न होगा, तो दिशा भी भिन्न होगी, मार्ग भी भिन्न होगा, साधन भी भिन्न होंगे, और शैली भी। बुद्धिमान् व्यक्ति अन्य व्यक्ति के रूप, रंग, आकृति, बल, बुद्धि, सामर्थ्य, पद, प्रतिष्ठा, भौतिक सम्पत्ति, ऐश्वर्य आदि को देख कर यह नहीं मान लेता कि यह पूर्ण सुखी है, शान्त है। पूर्ण सुखी होने की कुछ कसौटियां हमारे ऋषियों ने निर्धारित की हैं, यदि व्यक्ति उन कसौटियों पर खरा उतरता है, तो वह सुखी हो सकता है, यदि उन पर व्यक्ति उत्तीर्ण नहीं होता है, तो वह निश्चित् रूप से अशान्त, चिंतित भयभीत, दु:खी रहता है चाहे बाह्य लक्षणों से दिखाई न दे।

प्रेम मार्ग के पथिक, चाहे पश्चिम में हो या पूर्व में या अपने देश में ये बिना श्रेयमार्ग के सिद्धान्त, शैली को अपना पूर्ण सुखी हो ही नहीं सकते हैं, चाहे कितनी ही भौतिक उन्नति क्यों न कर लेवें। सच्चे ईश्वर तथा ईश्वराज्ञा को न मानने वाला व्यक्ति असमान्य/प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अन्य व्यक्ति/परिवार/समाज/राष्ट्र का अहित करने को समुद्यत हो जाता है। जिन मनुष्यों को, अन्त:करण में ईश्वर के अस्तित्व का बोध नहीं होता है, अथवा जो, शब्द प्रमाण वा अनुमान प्रमाण से ईश्वर को स्वीकारते तो हैं, किन्तु व्यवहार में ईश्वराज्ञा के विरूद्ध आचरण करते हैं, उनकी भी आत्मा में परमात्मा का प्रकाश विलुप्त हो जाता है। जैसे व्यक्ति बुरे कामों को करते समय, ईश्वर की ओर से भय, शंका तथा लज्जा-स्वरूप संकेतों का ग्रहण नहीं कर पाते हैं और वे स्वच्छंद होकर, निर्लज्ज होकर, पाप-अपराधों को करते रहते हैं।

हे परमेश्वर! हम अपने से निम्न स्तर के मनुष्यों को देशकर खिन्न होते हैं, घृणा-ग्लानि करते हैं। किन्तु इससे क्या लाभ? जब आत्म निरीक्षण करते हैं तो स्वयं में भी अनेक अवगुण दिखाई देते हैं। अवगुण न हों या न्यून हों, फिर भी अन्यों के दोषों को दूर करने का साहस, उत्साह, पराक्रम हमारे में नहीं है। ये साहस, बल, पराक्रम आदि गुण तब तक पूर्णरूप से नहीं उभरेंगे, जब तक हम स्वयं दोष रहित नहीं होंगे। इसलिए अब तो हमारी आपसे यही प्रार्थना है कि सर्व प्रथम हमारे समस्त दुर्गुणों को विनष्ट कर दो और समस्त भद्र गुणों से हमें परिपूर्ण कर दो। तब आपके विशेष ज्ञान-बल-सामर्थ्य से युक्त होकर न केवल अपने आर्यावर्त्त की, अपितु सम्पूर्ण विश्व की अवैदिक परम्पराओं को समाप्त करके, उनके स्थान पर विशुद्ध वैदिक शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता, खान-पान, आचार, विचार हो जायेंगे और आपका **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** का आदेश पूरा कर देंगे, इसी आशा विश्वास के साथ - **ज्ञानेश्वरआर्य**

दिल्ली एवं आस-पास की समस्त आर्य समाजें कृपया ध्यान दें : एम.डी.एच. वेद प्रचार वाहन की सेवाएं लें

सभी समाजों के अधिकारियों से सानुरोध प्रार्थना करते हुए विशेष सूचना दी जा रही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि द्वारा जो प्रचार वाहन चलाया जा रहा है उसमें बहुत अच्छा भजनीक है जो अपने साथियों के साथ सुन्दर भजन व प्रचार का कार्य कर रहा है। आप इनको वाहन सहित या जिस आर्य समाज मन्दिर के आगे वाहन खड़ा करने की जगह न हो तो भी भजनीक को बुला सकते हैं। वाहन में वैदिक साहित्य प्रचार सामग्री भी उपलब्ध रहेगी। इस वाहन पर होने वाला खर्चा जैसे भजनीक, उसके सहायक व वाहन चालक, तथा उसका सहायक सभी का खर्चा व वेतन आपकी दि.आ.प्र.सभा द्वारा व्यय किया जाता है यदि आप इसका लाभ उठायेंगे तो आपकी अपनी सभा को लाभ होगा सभा भी आप की आभारी रहेगी।

एस.पी. सिंह
सम्पर्क सूत्र:- 9540040324

आर्यसमाज के गीतों को बनाएं अपनी मोबाइल ट्यून (CallerTunes)

आर्यसमाज के गीतों को अपनी मोबाइल ट्यून बनाने के लिए आज ही डाउनलोड करें और अन्य महानुभावों को भी प्रेरित करें

Sr. No.	Song Title	Voda	Idea	Airtel	Tata CDMA	Tata Doco	BSNL (North)	MTS	Uninor	Tata Indico	Reliance
1	आई फौज दयानन्द वाली	10444132	720080	543211007382	376609	254930	173340	77772509	0387407	1242047	6312073
2	ये प्रभु हम तुम से	10444133	720084	543211007383	376614	254931	173341	77772510	0387408	1242048	6312074
3	होता है सारे देश का	10444134	720081	543211007384	376615	254932	173342	77772511	0387409	1242049	6312075
4	हम को सब दुनिया जाने	10444135	720082	543211007385	376616	254933	173343		0387410	1242050	6312076
5	जो होली सो होली	10444136	720090	543211007386	376622	254934	173344	77772512	0387411	1242051	6312077
6	पूजनीय प्रभु हमारे	10444137	720105	543211007387	376629	255260	173345	77772513	0387412	1242052	6312078
7	सुनो-सुनो ये दुनिया वालो	10444138	720115	543211007388	376639	254935	173346	77772514	0387413	1242053	6312079
8	यूँ तो कितने ही महापुरुष दिल्ली चलो (सम्मेलन गीत)	10444139	720111	543211007389	376644 543211462723	254936	173347	77772515	0387414 1721306	1242054	6312080

यदि आप इन गीतों में से किसी एक धुन को अपनी मोबाइल ट्यून बनाना चाहते हैं अपने मोबाइल से निम्न प्रकार लिखकर मैसेज करें

Voda- type "CT code"send sms to 56789
Idea- type "DT Code"send sms to 55456
Airtel- Dial Code and Say " YES"
Tata cdma- type "Wt code" send sms to 12800
Tata docomo- type "CT code" send sms to 543211
BSNL- type "BT code" send sms to 56700
MTS- type "CT code" send sms to 55777
UNINOR - type "CT code" send sms to 51234
TATA Indicom - type "WT code" send sms to 12800
Reliance - type "CT code" send sms to 51234

उदाहरण के तौर पर आपके पास Idea का कनेक्शन है और आप "Aai Fauj Dayaanand Wali" गीत की धुन अपने Idea मोबाईल पर कॉलर ट्यून बनाना चाहते हैं, तो आप अपने आइडिया फोन से टाइप करें "DT 720080" और 55456 पर SMS कर दें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

में देना चाहूँगा जैसे एक शब्द 'स्थानान्तरण' होता है। अर्थात् एक वस्तु को एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर रखना, लेकिन वह स्थान वस्तु के पूर्व स्थान का पूर्ण विकल्प होना चाहिए। यदि एक रेलगाड़ी को आप एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर ले जाएंगे तो वहाँ पर ले जाना होगा जहाँ उसकी पटरी अथवा स्टेशन होगा क्योंकि एक रेलगाड़ी को आप बस स्टॉप पर नहीं ले जा सकते जब तक कि वह रेल पटरी से सुसज्जित न हो इसी प्रकार यह धर्मान्तरण है। क्योंकि धर्म एक है अनेक नहीं। यदि व्यक्ति पुन: वैदिकता को स्वीकार करता है तो उसे धर्म में पुन: प्रवेश ही कहा जाएगा जिसे महापुरुषों ने **'शुद्धि-करण'** का नाम दिया है, जिसे महर्षि दयानन्द ने **'वेदों की ओर लौटो'** का नारा दिया और स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इसे **घर-वापसी** भी कहा है। जब मानव मात्र का धर्म एक ही है, दूसरा नहीं, तो धर्मान्तरण का तो प्रश्न ही नहीं उठता। वास्तव में यह प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि- जब उसे ज्ञान हो जाये तो वह अपनी भूल को सुधारे, वेदों की ओर लौटे और मानव से महामानव बनने की ओर अग्रसर हो जाये, जो उसका मौलिक अधिकार है। लोकोक्ति भी है कि- **'जब कोई जागे उसका तभी सवेरा'।** अमर-बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने **'शुद्धि-आन्दोलन'** का प्रारम्भ इसलिए किया कि- जिससे धर्म-भ्रष्ट अथवा अपने बिछड़े हुए भाइयों को, जो अवैदिक परम्पराओं में संलग्न हो गए थे, उनको शुद्ध कर पुन: वैदिक धर्म में प्रविष्ट किया जाये और इस राष्ट्र-भूत यज्ञ में उन्होंने अपने जीवन को आहुति के रूप में समर्पित कर दिया।

अब चिंतन का विषय यह है कि- जब 2500 वर्ष पूर्व कोई मत व सम्प्रदाय नहीं था, तो ये सब कौन थे? ये सब अपने ही सहोदर थे, जो किसी विकट परिस्थिति वश अथवा अज्ञानता में रास्ता भटक गए थे। विचार यह है कि प्राचीन काल में केवल दो ही पक्ष थे, एक आर्य तथा दूसरा अनार्य। जो वेदानुकूल जीवन व्यतीत करते थे, उन्हें आर्य तथा जो वेद विरुद्ध आचरण करते थे, उन्हें अनार्य कहा जाता था। आर्यों में वर्णाश्रम-धर्म की व्यवस्था थी, जो ब्रह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, एवं शूद्र की मान्यताओं पर आधारित थी। और जब ये व्यवस्था अपने वास्तविक उद्देश्य से भ्रष्ट हुई, तब से भिन्न-भिन्न जातियाँ एवं सम्प्रदाय समाज में पनप गए। जिसके कुछ मूल भूत कारण इस प्रकार हैं।

1. आलस्य और प्रमाद:- महर्षि दयानन्द ने आर्यों के आलस्य और प्रमाद को धर्म के पतन का सबसे बड़ा कारण माना है, क्योंकि धनैश्वर्य के अत्यधिक बढ़ने से मानव ब्रह्मचर्य, वेदाध्ययन एवं सत्याचरण के तपोनिष्ठ व्यवहार को त्यागकर अन्यत्र वेद विरुद्ध कार्यों को आसान समझ उनमें श्रम करने लगा और अज्ञान, अविद्या के गर्त में गिरता चला गया।

2. कर्म के स्थान पर जन्म के आधार पर वर्ण व्यवस्था:- वर्णाश्रम व्यवस्था में ब्राह्मण वर्ग को समाज का जिम्मेदार एवं बुद्धिजीवी वर्ग माना जाता है। लेकिन इस समुदाय ने अपने मूल कर्त्तव्य यज्ञ (यज्ञ करना व कराना), तप (ब्रह्मचर्यपूर्वक सांगोपांग वेदाध्ययन व अध्यापन) और दान (दान लेना व दान देना) को त्यागकर, वर्ण व्यवस्था को जन्म के आधार पर मान्यता दी और कर्मकाण्ड को मात्र आजीविका का साधन बनाकर रख दिया। यह वर्ग जब अपनी जिम्मेदारियों से हटा तो देश अपने विनाश की ओर अग्रसर हो चला।

3. स्त्री जाति का तिरस्कार:- वैदिक धर्म के ह्रास में एक कारण स्त्री जाति का तिरस्कार भी रहा, जिसमें धर्माचार्यों ने शूद्र एवं राष्ट्र निर्मात्री शक्ति नारी के लिए वेदाध्ययन की निषेधाज्ञा लागू कर एक बहुत विशाल जन समुदाय को अज्ञान के महा अंधकार में धकेल दिया जिससे शिक्षा एक विशेष वर्ग के अधिकार में सिमट कर रह गई।

4. पाषाण-पूजा:- संसार की एकेश्वर, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक एवं सनातन चेतन सत्ता के स्थान पर पाषाण आदि जड़ पदार्थों में उपासना की मान्यता ने इस आर्य जाति-को पंगु ही नहीं बनाया अपितु पराधीन बनाकर अपने राष्ट्र धर्म, संस्कृति, स्वाभिमान और चरित्र को नष्ट कर हाथ पर हाथ रख बैठने के लिए विवश कर दिया।

5. अभक्ष्य का भक्षण:- मद्य-मांस आदि के खान-पान से समाज में आई विकृति से वेश्या-वृत्ति, धार्मिक कार्यों में हिंसा अर्थात् यज्ञों में पशु-बलि, नर-बलि, एवं सती-प्रथा आदि कुकृत्यों के प्रचलन से यह जाति घोर अंधकार में डूबती चली गई।

5. अन्य कारण:- उपरोक्त न करने योग्य कार्यों को धर्माचार्यों द्वारा करने के कारण समाज में अंध परम्पराएँ चालू हो गई जिससे कुछ लोगों ने इन परम्पराओं को गलत मानकर अपनी एक अलग विचारधारा लेकर नए लोगों को एकत्रित कर एक नए मत का आरम्भ किया। इस प्रकार से अनेक मतों का प्रादुर्भाव हुआ और यह भारत वर्ष की कमजोरी बन गई, इसी कमजोरी का लाभ उठाकर इस्लामिक समुदाय ने लगभग 800 वर्षों तक भारत को अपने अधीन रखा, जिसमें अबलाओं का सतीत्व-हरण, चोरी, लूट, नर-संहार तथा बलात् इस्लाम ग्रहण जैसे कार्य तलवार की नोक पर किये गए और लगभग 200 वर्षों तक अंग्रेजों ने भी हर प्रकार से शोषण करने का पूर्ण प्रयास किया। जिस कारण भारत की जनता को कई प्रकार से अपने धर्म को त्यागने के लिए विवश होना पड़ा। जैसे-

1. बलात् धर्म का परित्याग
2. अज्ञानता से धर्म का परित्याग
3. दरिद्रता के कारण धर्म परित्याग
4. बहकावे में आकर धर्म परित्याग
5. सुरक्षा संरक्षण हेतु धर्म परित्याग
6. अनाचार (स्वेच्छा) करने हेतु धर्म परित्याग

उपरोक्त प्रकार से यदि कोई व्यक्ति धर्म का परित्याग करता है, तो धर्माचार्यों एवं राष्ट्र के उत्तरदायित्व धारणकर्ताओं का कर्त्तव्य बनता है कि ऐसे दिक् भ्रमित एवं बिछड़े बंधुओं को पुन: धर्म की मुख्य धारा से जोड़ना होगा। यदि धर्म अथवा अपने भाइयों से भटके हुए लोग संज्ञान में आकर पुन: ईश्वरीय मार्ग के अनुगामी होना चाहे तो हम सबको इसके लिए अपने घरों में खुले हृदय से उनका स्वागत करना होगा। क्योंकि ये सब मतावलंबी हमारे पूर्व बिछड़े अथवा तिरस्कृत भाई हैं जो किसी विवशता के कारण हमसे दूर हो गए थे। हमें उनको भूल से ऊपर उठने का मौका देना होगा, यही मानवता है। इस अवसर पर कवि कुंवर सुखलाल 'आर्य मुसाफिर' की ये पंक्तियाँ स्मरण आती हैं- **"आर्यों गले से लगालो इन्हें, वर्ना ये लाल गैरों के हो जायेंगे।"**

यह कथन आज भी उतना महत्त्वपूर्ण है जितना उस समय था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इन भावों को चरितार्थ ही नहीं किया अपितु यह कार्य राष्ट्र की उन्नति में एक मील का पत्थर शाबित हुआ। वास्तव में कथित धर्मान्तरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दू वर्ग पीड़ित समुदाय है, उत्पीड़क नहीं। सदियों के अनुभव, आंकड़े तथा महापुरुषों के विचार इसका वास्तविक रूप दर्शाते हैं। अपने एक बयान में गाँधी जी ने कहा था कि- "ईसाई मिश्नरियों द्वारा 'धर्मान्तरण' कराना दुनिया में अनावश्यक अशांति फैलाना है।" लगभग एक वर्ष पूर्व कांग्रेस नेता श्री जयराम रमेश ने केंद्रीय मंत्री पद से कहा था कि ईसाई मिश्नरियों को 'लक्ष्मण-रेखा' का ध्यान रख धर्मान्तरण कराने वाली प्रवृत्ति छोड़नी चाहिए। परन्तु यह विवाद मुस्लिम सम्प्रदाय से जुड़ा है, इस प्रकरण में आधुनिक मनीषी श्री अरविन्द के विचार अधिक प्रासंगिक है। उन्होंने 1923 में कहा था कि- 'निश्चय ही हिन्दू मुस्लिम एकता इस आधार पर नहीं बन सकती कि मुसलमान तो हिन्दुओं को धर्मान्तरित कराते रहेंगे जबकि हिन्दू किसी मुसलमान को धर्मान्तरित नहीं कराएँगे।' इस कथन पर यदि विचार किया जाये तो वर्तमान विवाद समझा जा सकता है। अत: 'घर-वापसी' का यह सहज कार्यक्रम चलाना, उदात्त वैदिक-दर्शन का लाभ बताकर भारत के गैर हिन्दुओं को स्वैच्छिक रूप से पुन: हिन्दू समाज का अंग बनाना हमारे साधु-संतों का सबसे प्रमुख कर्त्तव्य होना चाहिए, यही राष्ट्रीय सुरक्षा और सामाजिक एकता की दूरगामी कुंजी है, तथा जिहादी आतंकवाद से भी अंतिम मुक्ति का एकमात्र रास्ता भी। जिस मतवाद से सारी दुनिया में आतंकी बन रहे हैं, उससे किसी को मुक्त कर वैदिक धर्म में लाना शांति सद् भाव को मजबूत करने का दूसरा नाम है। इस लिए धर्मान्तरण पर खुली चर्चा अवश्य होनी चाहिए। जिसमें पॉप से लेकर मौलानाओं की तबलीग, इस्लामिक किताबों एवं हिन्दू महापुरुषों के विचारों को प्रत्यक्ष करना चाहिए, राजनीति नहीं एक राष्ट्रीय प्रश्न मानकर। यह तभी होगा जब विचार का केंद्र हिन्दू संगठन नहीं, 'धर्मान्तरण' होगा। किसी भी अवस्था में इस मुद्दे पर हिन्दुओं पर आरोप लगाना एक बड़ा विश्वासघात है। जिसके विरुद्ध स्वामी श्रद्धानन्द ने 11 फरवरी 1923 को भारतीय शुद्धि-सभा की स्थापना कर 30 हजार लोगों को शुद्ध कर वैदिक धर्म में प्रविष्ट कराया। मुसलमानों में इस आन्दोलन के प्रति भारी प्रतिक्रिया हुई, और सारे फिसाद के आरोप स्वामी जी पर लगाये। स्वामी जी ने साम्प्रदायिक समस्या का विषद् विश्लेषण करते हुए दंगों का कारण मुसलमानों की संकीर्ण साम्प्रदायिक सोच को बताया। तात्कालिक स्वराज समिति ने स्वामीजी को तत्काल शुद्धि-आन्दोलन पर रोक लगाने के लिए कहा, इस पर स्वामी जी का स्पष्ट उत्तर था कि- "मैं आगरा से शुद्धि प्रचारकों को हटाने के लिए तैयार हूँ अगर मुस्लिम उलेमा अपने तबलीग के मौलवियों को हटा दें। तथा जिस धार्मिक अधिकार से मुसलमानों को तबलीग और तंजीम का हक है उसी अधिकार से उन्हें अपने बिछुड़े भाइयों को वापिस अपने घरों में लौटाने का हक है।" जिस प्रस्ताव को मुस्लिम उलेमा न माने।

अत: 'घर वापसी' का कार्य हिन्दू जाति के लिए आत्म-रक्षा का अत्यावश्यक कर्त्तव्य है। इसकी निंदा करने से पहले ईसाई एवं मुस्लिम नेताओं को अपने षडयंत्रकारी धर्मान्तरण सम्बन्धी सिद्धान्तों की खुली भर्त्सना करनी होगी। अन्यथा यह एक धोखा ही है।

अत: उपरोक्त कथन के आधार पर यही कहा जायेगा कि अन्य मतानुयायियों को वैदिक धर्म में प्रविष्ट कराना धर्मनान्तरण नहीं, धर्म में वापसी है। जिन महान कार्यों को महर्षि दयानन्द ने प्रारम्भ किया, उनको पूर्ण करने में स्वामी जी ने सर्वस्व बलिदान कर ऋषि-ऋण को चुकाने का महान प्रयास किया। जो भारत के बलिदानी इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा है। उनका देश पर जो ऋण है उससे उऋण होने के लिए हमें उनके बताये मार्ग का अनुसरण करना ही होगा। तभी राष्ट्र और समाज का उत्थान होगा। उनके बलिदान दिवस पर सम्पूर्ण राष्ट्र उन्हें शत्-शत् नमन् करता है। धर्मान्तरण नहीं बल्कि हिन्दुओं के 'घर-वापसी' जैसे समाज सुधार के कार्यों में उनके जीवन-दर्शन को स्मरण करता रहेगा।

अत: 'धर्मान्तरण' के औचित्य को समझ कर 'घर वापसी' के मानव कल्याण रूपी यज्ञ में प्रत्येक भारतीय का सहयोग अपेक्षित हैं।

यह वेद की आज्ञा,
और धर्म का सार है।
ऋषियों का सन्देश है
कृण्वन्तों-विश्वमार्यम्'
जिसका आधार है।

ज्ञानवर्धिनी यज्ञ के साथ उपनिषद्युग की याद दिलाते हुए 'वैदिक' उपाधि दीक्षांत समारोह सम्पन्न

गुरुकुल सम्प्रदाय के अनुसार ज्ञानवर्धिनी यज्ञ के साथ कश्यपाश्रम में समूह के विविध श्रेणी में काम करने वाले, विविध जाति और विविध आयु के साधारण 13 मनुष्य, जो पिछले पांच साल से ज्यादा समय से आचार्य श्री एम. आर. राजेश से वेद सीख रहे थे, उन्हें 'वैदिक उपाधि' से सम्मानित किया। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के विशिष्ट सूक्तों, ईश्वरस्तुति प्रार्थनोपासना मंत्र, स्वस्ति वाचन, शांतिकरण, आघारावाज्यभागाहुति, स्विष्टकृताहुति, पवमानी आहुति सब पढ़कर यज्ञाग्नि में हवि डालते हुए यह विशिष्ट "वैदिक" उपाधि आचार्य श्री एम.आर.राजेश ने 13 लोगों को समर्पित किया।

केरल के कश्यापाश्रम में वैदिक उपाधि एवं प्रमाण पत्र प्रदान करते आचार्य एम. आर. राजेश

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल का

आर्य सम्मेलन सम्पन्न

दक्षिण दिल्ली की आर्यसमाजों के संगठन दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के तत्वावधान में गुरुकुल गौतम नगर में 21 दिसम्बर को आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता मंडल प्रधान श्री रविदेव गुप्ता जी ने की तथा आशीर्वाद स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने प्रदान किया। इस अवसर पर वैदिक विद्वानों ने वैदिक मान्यताओं द्वारा अंधविश्वास व पाखण्ड निराकरण विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला।

– *चतरसिंह नागर, महामन्त्री*

आर्यसमाज सूरसागर जोधपुर का

60वाँ वार्षिकोत्सव

समापन समारोह : 28 दिसम्बर, 2014

यज्ञ पूर्णाहुति: प्रात: 8:30 बजे

प्रवचन : पं. भरतलाल शास्त्री
पं. रामनिवास गुणग्राहक
पं. शिवनारायण शास्त्री

भजन : पं. सन्दीप आर्य

– *नरसिंह सोलंकी, मन्त्री*

विश्व शान्ति महायज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज फरीदकोट पंजाब में 27 नवम्बर से 30 नवम्बर तक विश्व शान्ति महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सुनील दत्त शास्त्री जी फिरोजपुर ने तीनों दिन लगातार अपने अमृतमय वचनों व ज्ञान वर्षा के द्वारा श्रोतागणों व यज्ञमानों को मन्त्रमुग्ध करते रहे। आचार्य जी ने बताया कि सन्तानों व मनुष्यों का निर्माण सत्यार्थ प्रकाश के द्वारा सम्भव है यदि हम बच्चों को प्रारम्भ से ही धार्मिक नहीं बनायेंगे तो वे डाक्टर इन्जीनियर वकील तो बन सकते हैं लेकिन सच्चे मानव नहीं बन सकते। आर्य भजनोंपदेशक पं० सत्यवीर आर्य व पं० प्यारेलाल आर्य, बुलन्दशहर (उ०प्र०) ने बड़े ही सुमधुर भजन सुनाकर श्रोतागणों को आनन्दित किया। – *सतीश कुमार शर्मा, मन्त्री*

माघ मेला – 2015 में प्रचार

प्रयाग का माघ मेला 5 जनवरी से 4 फरवरी, 2015 तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य उप प्रतिनिधि सभा आर्यसमाजों के सहयोग से जन जागरण करती आ रही है। आर्यसमाज के विद्वानों, प्रचारकरों संतों से निवेदन है कि अधिकाधिक संख्या में पधारकर वैदिक धर्म के प्रचार में सहयोगी बनें।

आचार्य नरेन्द्र शास्त्री सम्मानित

वैदिक दर्शन प्रतिष्ठान मुम्बई का प्रथम वार्षिक सम्मेलन 16 नवम्बर को बोरिवली (पू.) में आयोजित किया गया। इस अवसर पर आचार्य नामदेव आर्य ने यज्ञ सम्पन्न कराया तथा आचार्य शिवदत्त पाण्डेय जी के उदबोधन हुए। इस सम्मेलन में मुम्बई आर्य वीर दल के युवा संचालक आचार्य नरेन्द्र शास्त्री जो अपनी प्रतिभा के अनुकूल योग शिविरों एवं चरित्र निर्माण शिविरों के माध्यम से मुम्बई में एक अलग पहचान बना चुके हैं, को श्री टी.एस. भाल आई.पी.एस. एवं श्री लद्धाभाई पटेल ट्रस्टी महर्षि दयानन्द ट्रस्ट टंकारा के करकमलों से "वैदिक वीर" पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया।

– *परेश पटेल, महामन्त्री*

आर्यसमाज लोहिया नगर, शहजादपुर का

84वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज लोहिया नगर जिला अम्बेडकर नगर (उ.प्र.) का 84वां वार्षिकोत्सव 8 से 11 नवम्बर तक सम्पन्न हुआ। आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी ने कहा अध्यात्म की यात्रा में प्रात: काल प्रतिदिन एकांत सेवन नितांत आवश्यक है। अपनी आवश्यकतायें कम करनी है और उपलब्ध साधनों का त्याग पूर्वक उपयोग करना है। भजनोपदेशक श्री संदीप वैदिक तथा सुश्री प्रियंका भारती श्री राममगन जी गुरुकुल धनपतगंज ने मधुर भजनों व उपदेशों से जनता का मन मोह लिया। – *विनोद गुप्ता, प्रधान*

आर्य समाज कोटा ने फुटपाथ पर

ठिठुरते बेसहारा गरीबों को कम्बल ओढ़ाये

खुले आसमान के नीचे जमीन की चादर पर गहरी नींद सोये व्यक्तियों को आर्यसमाज कोटा की ओर से कम्बल ओढ़ाए गए। यह सेवा कार्य जिला कोटा के अन्तर्गत छावनी से कोटडी चौराहा व गुमानपुरा से आने वाली सड़क के बीच बने फुटपाथ पर किया गया।

आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा की अगुवाई में कैलाश बाहेती प्रधान आर्य समाज रामपुरा, अरविन्द पाण्डेय प्रधान गायत्री विहार, रघुराज सिंह प्रधान तलवण्डी, श्रीचन्द गुप्ता उपप्रधान जिला सभा, पंजाबी जनसेवा समिति के महामन्त्री दर्शन पिपलानी मुकेश चड्ढा विज्ञान नगर का दल कम्बल लेकर पहुंचा। आर्य समाज के दल ने इन महिलाओं और बच्चों को कंबल ओढाये तो इनके चेहरे खुशी से चमक उठे।

– *अरविन्द पाण्डेय, प्रचार सचिव*

छात्रवृत्ति वितरण समारोह सम्पन्न

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा 12 अक्टूबर 2014 को अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति समारोह का भव्य आयोजन 119, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। यज्ञ ब्रह्मा श्री रामपाल शास्त्री जी थे।

इस कार्यक्रम में आर्य जगत् के छह विद्वान्-विदुषियों का सम्मान करते हुए उन्हें प्रशस्ति पत्र, शाल एवं 11-11 हजार रुपये की सम्मानित राशि श्री मुखी एवं श्रीमती सविता मुखी (यू.एस.ए.), श्री सत्यप्रसाद एवं श्रीमती सुशीला बलदेव मल्हू (सुरीनाम), श्रीमती दिलभरी (ईस्माईला, हरियाणा) के करकमलों से प्रदान की गई। प्रतिष्ठान द्वारा अतिथियों को स्मृतिचिह्न एवं अङ्गवस्त्र प्रदान करके सम्मानित किया गया। – **सचिव**

आर्यसमाज अन्धेरी (प.) का

28वां वार्षिकोत्सव समारोह

25-28 दिसम्बर, 2014

यज्ञ पूर्णाहुति एवं समापन समारोह
28 दिसम्बर, 2014

प्रात: 7 से 1:30 बजे

यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य वागीश शर्मा

भजन : श्री प्रभाकर शर्मा

– *हरीश आर्य, प्रधान*

आर्यसमाज सैक्टर 3, 4, 5, 6 एवं विजय विहार, रोहिणी द्वारा

स्वच्छता अभियान

आर्य समाज ने 7 दिसम्बर को क्षेत्र में स्वच्छता अभियान का आयोजन किया। आर्य समाज ने यह स्वच्छता अभियान अपने संकलन को पूरा करते हुए किया है। जिसमें समाज के मन्त्री सुदेश चन्द्र डोंगरा, कोषाध्यक्ष सुरिन्द्र चौधरी तथा अन्य सदस्यों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। समाज प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को स्वच्छता अभियान चलायेगा। – *प्रधान*

उत्तर रेलवे ट्रेनिंग सैन्टर में

द्वितीय योग शिविर सम्पन्न

समयोग फॉउन्डेशन, दिल्ली द्वारा 4 दिसम्बर को दूर संचार प्रशिक्षण केन्द्र उत्तर रेलवे गाजियाबाद में द्वितीय योग शिविर श्री देवेन्द्र उपाध्याय अखिल भारतीय योग संस्थान की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। प्राणायाम ध्यान की क्रिया को योगी अशोक मित्तल ने कराते हुए कहा प्राणायाम एवं ध्यान से आंतरिक मन शान्त होता है तथा मनुष्य मानसिक तनाव से निवृत्त होकर आनन्द की अनूभूति प्राप्त करता है। अन्त में ई० एस० के० भारद्वाज ने आगन्तुकों को धन्यवाद देते हुये योग शिविर के समापन के अवसर पर, कहा कि योग की शरण में ही स्वस्थ तन एवं स्वस्थ मन रह सकता है। आयोजन में प्रशिक्षक डॉ० अग्निदेव शास्त्री एवं अशील कुमार का सहयोग रहा।

–*हर्ष बवेजा, मीडिया प्रभारी*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

आवश्यकता है

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की शिरोमणि नियन्त्रक संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा निम्न लिखित पदों के लिए आवेदन आमन्त्रित करती है-

1. हिन्दी टाईपिस्ट/अशुलिपिक : जो हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी कार्य कर सकें तथा डी.टी.पी. का भी ज्ञान हो।

2. एकाउंटेंट : पूर्ण अनुभवी हों।

3. ड्राइवर : कमर्शियल लाइसेंस एवं बैज वालों को वरीयता। सभी पदों के लिए अनुभवी योग्य उम्मीदवारों की आवश्यकता है। योग्यता के अनुसार वेतन सहित अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को वरीयता दी जाएगी। इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा भेजें।

Email:aryasabha@yahoo.com

राष्ट्रीय स्पर्धा में गुरुकुल पौंधा का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

चतुर्थ के-3 कराटे, कैम्फो, कुबुडो नेशनल चौम्पियनशिप 19 से 21 दिसम्बर, 2014 प्रेमनगर स्थित राजकीय बारात घर में आयोजित हुई। जिसमें भारत के सभी प्रान्तों से प्रतिभागियों ने भाग ग्रहण किया। इस प्रतिस्पर्धा में गुरुकुल पौन्धा देहरादून की टीम ने भाग लेकर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 8 स्वर्ण, 7 रजत तथा 7 कांस्य पदक प्राप्त किये। इसके साथ ही तीन प्रान्तों ने प्रदर्शनी प्रस्तुत की जिसमें उत्तराखण्ड का प्रतिनिधित्व करते हुए गुरुकुल पौंधा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। पदक विजेताओं में नितिन आर्य, यशवर्धन आर्य, वेदमित्र आर्य, अन्वेष आर्य, अनित आर्य, सारांश आर्य, सुभम् आदि प्रमुख हैं। टीम के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को देखकर जजों ने निर्णय दिया कि मार्च 2015 में थाईलैण्ड में आयोजित होने वाली इन्टरनेशनल नानबूडो चौम्पियनशिप में भाग लेंगे। – *आचार्य*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 22 दिसम्बर से रविवार 28 दिसम्बर, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2012-13-14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 25/26 दिसम्बर, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012-14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 दिसम्बर, 2014

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में

अखिल भारतीय श्रद्धानन्द हाकी टूर्नामेंट का उद्घाटन

''खेल को खेल की भावना से ही खेला जाए, इसमें किसी प्रकार की स्पर्धा नहीं होनी चाहिए क्योंकि खेल में हार और जीत तो लगी रहती है।'' अखिल भारतीय श्रद्धानंद हाकी टूर्नामेंट के उद्घाटन अवसर पर डॉ सुरेन्द्र कुमार कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि स्पर्धा के कारण खिलाड़ियों में वैमनस्य बढ़ने की आशंका रहती है अत: हारजीत की भावना से अलग होकर केवल अच्छे प्रदर्शन की भावना से खेल खेलना ही श्रेयस्कर है।

मुख्य अतिथि आचार्य बालकृष्ण, कुलपति पतंजलि विश्वविद्यालय ने कहा कि हमें भारतीय खेलों को बढ़ावा देना चाहिए खेलों का आयोजन राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत होना चाहिए उन्होंने गुरुकुल के संस्थापक स्वामी श्रद्धानंद महाराज को स्मरण करते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानंद की गुरुकुल भूमि ऋषि भूमि है प्रेरणा भूमि है। हमें इसका नाम देश-देशांतर में फैलाना चाहिए। उन्होंने खिलाड़ियों के अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते हुए सभी को पतंजलि में निर्मित च्यवनप्राश देने की बात कही।

डा0 आर0के0एस0डागर ने स्वागत भाषण दिया। संचालन सचिव डॉ0 अजय मलिक तथा डा0 शिवकुमार चौहान ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम में कुलसचिव डा0 वी0के0 शर्मा, पूर्व हाकी खिलाड़ी जयनारायण त्यागी, मुख्याधिष्ठाता यशपाल आर्य, सहायक मुख्याधिष्ठाता जयप्रकाश विद्यालंकार, प्रो0 मुकेश रंजन वर्मा, प्रो0 सोमदेव शतांशु, डा0 प्रदीप कुमार जोशी, यशपाल राणा, दुष्यन्त राणा, प्रो0 ईश्वर भारद्वाज, प्रो0 दिनेश भट्ट प्रो0 एल0 पी0 पुरोहित, डा0 आर0 के0 नेगी आदि उपस्थित थे।

उद्घाटन मैच डोगरा रेजीमेंट और टाऊन हाल क्लब रामनगर के बीच हुआ। डोगरा रेजीमेंट ने मैच 7-1 से जीता।

- डॉ. प्रदीप कुमार जोशी
जन सम्पर्क अधिकारी

प्रतिष्ठा में,

आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में आर्य वीर दल मुम्बई द्वारा आयोजित आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर 26 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2014 तक आर्य समाज सान्तक्रुज के प्रागंण में सम्पन्न हुआ।

शिविर में शारीरिक पाठ्यक्रम का संचालन द्रोणस्थली तपोवन देहरादून से आई सुव्रती आर्या, श्रीमती वीणा चतुर्वेदी पाणिनी कन्या गुरुकुल वाराणसी एवं अंजलि गोस्वामी एवं सौरभ सिंह मुम्बई ने किया। आर्य समाज सान्ताक्रुज के महामन्त्री श्री संगीत शर्मा शिविराध्यक्ष के सफल निर्देशन में मुम्बई आर्य वीर दल के संचालक पं० नरेन्द्र शास्त्री तथा मन्त्री पं० धर्मधर आर्य के नेतृत्व एवं श्री सतीश गोस्वामी व ज्ञानप्रकाश आर्य के अथक पुरुषार्थ से सम्पन्न हुआ। शिविर में लगभग 40 कन्याओं ने भाग लिया और आसन-प्राणायाम, कुंग-फू कराटे, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्यनमस्कार आदि व्यायाम तथा विभिन्न खेल खिलाए गये। ईश्वर- जीव-प्रकृति, वेद, सृष्टि रचना, पंचमहायज्ञ, 16 संस्कार वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था की जानकारी सरल ढंग से दी। श्रीमती रमा आर्या, श्रीमती प्रिया कटारिया एवं डॉ. तारा सिंह ने चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास, तनाव मुक्ति, योग व व्यवहारिक जीवन में सफलता स इन सभी विषयों की बौद्धिक परीक्षा ली गई जिनमें वरिष्ठ वर्ग में कु. डिम्पल पोकार ने प्रथम, कु. सकृति द्वितीय कु. विराली ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमती अल्का केरकर उपमहापौर ने इस प्रकार के शिविर प्रतिवर्ष करने का आग्रह किया, जिससे नवयुवक-युवतियों को वैदिक संस्कृति-सभ्यता से अवगत कराया जा सके।

-धर्मधर आर्य, महामन्त्री

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; टेलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह